बेटी : ताश के पत्ते

मोर्जुम लोयी

पिछले एक साल से याज्ञा की माँ बिस्तर पर पड़ी हुई है। याज्ञा मुझसे उम्र में काफी बड़ी है, किंतु हम दोनों में एक चीज़ कॉमन है- वह और मैं अपने माता-पिता की अंतिम संताने हैं। हम संग-साथ खेले। याज्ञा का स्कूल में दाखिला देर से हुआ। माँ के बिस्तर पर पड़े रहने से याज्ञा के खेत का काम भी रुक गया। पिताजी को घर की परेशानियों से भागने के चक्कर में जुए की लत लग गई।

दिन भर उसकी माँ बिस्तर पर पड़े-पड़े कराहती रहती, खाँसती रहती। उन दिनों टी.बी. जानलेवा होने के साथ-साथ समाज में बहुत घृणित बीमारी मानी जाती थी। अब तो पीठ की चमड़ी भी छिल गई, जिस पर मक्खियाँ भिनभिनाती रहती। मेरी माँ मुझे मना करती कि मैं वहाँ न जाऊँ, पर याज्ञा के साथ दोस्ती मुझे अच्छी लगती। दोपहर का भोजन स्कूल से आकर हम सब बच्चे एक-साथ खाते। पर याज्ञा के पास दोपहर का भोजन नहीं होता।

"मेरा आधा खा लो।" मैं कहती।
"माँ भी भूखी है।" वो कहती।

फिर मैं घर से चावल चुराकर ले जाती और उसके घर बनाकर खाती। घर पर भाई होते थे। उनसे नज़र बचाकर याज्ञा फ्रॉक में चावल को बांधकर सूँअरबाड़े वाले हिस्से से नीचे उतरती और मैं आगे की सीढ़ी से। इस तरह मैं, याज्ञा और उनकी माँ भोजन करते। उनकी माँ बहुत कम खाती, या यों कहे कि खाती ही नहीं थी।

दो नदियों के बीच बसा हमारा गाँव बहुत सुंदर है। चारो ओर पहाड़ों से घिरा गाँव अपने मनोहारी दृश्य के कारण अद्भुत लगता। दिन के समय हम धान सुखाते। माँ कहती–"तेज़ धूप में अचानक बारिश होती है तो दिशा का ख़्याल रखना। ये बात हमेशा ध्यान देना कि उत्तर, पूरब या दक्षिण दिशा की बारिश गाँव तक नहीं पहुँचती है। पश्चिम दिशा में बारिश होती है तो हमें फटाफट धान को समेट लेना चाहिए, क्योंकि वह गाँव तक पहुँचती थी।"

गाँव के बुजुर्ग जानकार बहुत होते हैं। उनकी ख़ासियत है कि वह बड़ी सूक्ष्म और पत्ते की बात छोटे उदाहरण या बातचीत में कह जाते हैं। वे अनुभव के आधार पर कई बातें हमें सिखाते हैं, जिसका कभी-कभी कोई वैज्ञानिक कारण या तर्क मालूम नहीं देता है। आये दिन पहाड़ की पश्चिम दिशा से गाँव के बिलकुल पास हिरण की रोने की आवाज़ आती है तो उसे अशुभ माना जाता है। गाँव वाले कहते हैं कि 'गाँव में कोई मरने वाला है'। उस रोज़ याज्ञा की माँ ने भी कहा– "पश्चिम दिशा से आवाज़ आ रही है। इस बार मेरी बारी है।" और अगली सुबह उन्होंने हमेशा के लिए आंखे मूँद ली।

यूं शिकारी लोग बंदूक लेकर आवाज़ की दिशा का पीछा करते और हिरण का शिकार किया करते पर पश्चिम दिशा से रोने वाली हिरण की आवाज़ हिरण किसी की आत्मा होती है, इसलिए उसका शिकार नहीं किया जाता।

एक बार मैंने माँ से पूछा–"माँ, क्या सचमुच हिरण किसी की आत्मा होती है?"

"हाँ, ये सिर्फ मान्यता नहीं है, ऐसा वास्तव में होता है। आमतौर पर गाँव के सबसे बुजुर्ग, बीमार लोग ऐसे में मरा करते हैं, किंतु कभी–कभी कोई स्वस्थ या जवान लड़के-लड़कियां भी मर जाया करते हैं। हिरण उस दिशा में बेकार नहीं रोते, कोई न कोई अवश्य मरता है।"

मेरा बाल मन डर के कारण रोने को होता। मेरे रौंगटे खड़े हो जाते, आँखों में आँसू आ जाता। रात के समय ऐसी आवाज़ आने पर माँ से चिपक जाती। डर या भय माँ के स्पर्श और साथ पाकर कम हो जाता और मैं सुकून से सो जाती।

माँ की मौत के बाद याज्ञा की पढ़ाई छूट गई। याज्ञा की माँ की मौत के साथ उसके जीवन में कई पहाड़ टूट पड़े। बड़े भाई की शादी हो गई पर भाभी माँ का दर्जा न दे सकी। भाभी की याज्ञा से बनती नहीं थी। ममता की प्यासी याज्ञा ममता से वंचित रही। पिता ने ताश के खेल में सब कुछ हार गए और अंत में अपनी बेटी को भी...।

"क्या ताश के पत्ते ही मेरा मूल्य है, आबो ?" याज्ञा ने बस इतना पूछा।

पिता की नज़रे झुक गई पर वो फिर भी कहते हैं–"वह धनी परिवार है। तुम्हें खाने-पीने की कोई कमी नहीं होगी। इज्ज़त भी खूब मिलेगी।"

"…और मेरा पति? क्या वो मुझे अपनाएगा? मैं कम पढ़ी-लिखी, गाँव की लड़की। वो पढ़ा–लिखा, शहर का लड़का, क्या आपको फिर भी लगता है कि मेरा भविष्य सुरक्षित है?"

"तुम नौकर नहीं 'बहू' कहलाओगी। बड़ी बहू।"

"पिताजी, नाम 'बहू' का होगा पर काम नौकर का रहेगा, ये आप खूब समझते हैं। बिन पति के बहू।" अंतिम शब्द गले में गुम हो गए।

कैसी विडंबना है? एक बेटी अपने पिता से पति-पत्नी के संबंधों पर चर्चा कर रही है। वह अपने पिता की विवशता समझती है, लेकिन वास्तविकता से भी परिचित है। कहने को यह विवाह होगा, लेकिन वैवाहिक जिंदगी सपने ही रह जाएँगे। याज्ञा न चाहते हुए भी चुप्पी ओढ़ लेती है। बहुत कुछ उसके भीतर ही घुट जाता है।

याज्ञा एक दिन ससुराल आ गई। वो घर का सारा काम करती। सब उसे ' ञाम्तअ' (बड़ी बहू) कहकर बुलाते पर जिसके लिए बहू बुलाया जा रहा, वह उससे खींचा–खींचा रहता। वह घर देर से आता, सुबह जल्दी निकल जाता। एक अच्छी पत्नी बनने के प्रयास में याज्ञा उसका इंतज़ार करती। उसके आने तक खाना नहीं खाती।

याञा के पति ने एक दिन उसे जो कहा, यह सुनने के लिए शायद वह पहले से तैयार बैठी थी। उसने कहा कि–"देखो, तुम खुद खाकर सो जाया करो। मेरा इंतजार मत किया करो, मुझे अच्छा नहीं लगता। और बार–बार मेरी पत्नी बनने की कोशिश मत करो, मैं तुम्हारा पति नहीं हूँ।"

याञा का कलेजा जैसे फट पड़ने को हुआ, लेकिन गला रुंध गया। आवाज़ नहीं निकले। वह फफककर रोना चाहती थी, लेकिन जैसे वह निष्प्राण हो गई हो। याञा धीरे से अपने आँसू पोछकर फर्श पर चटाई बिछाकर सो गई।

ससुराल मेहमानों से भरा रहता। बड़े–बड़े बर्तनों में रोज़ खाना बनाती। दिन में कई बार बनाती। याञा के आने से उसकी सास को कुछ आराम हुआ। अब घर के नौकर याचाक और उसका पति को भी थोड़ा फुर्सत मिल जाते है। वरना क्या दिन, क्या रात, काम ही काम। रोज़ पोका (मदीरा), चाय, बर्तन। याञा अपने सास-ससुर का खास ख्याल रखती। उनका खाना, कपड़े धोना सब। एक बार रात के वक्त मेहमानों के साथ बैठकर अचानक आतो (ससुर) ने ऐलान कर दी–"कार्ली (बड़ा बेटा) अगर ञाम्तअ को नापसंद करता है तो मेरा छोटा बेटा है न, कार्गअ। ञाम्तअ को इससे एतराज़ नहीं होना चाहिए।"

बर्तन उठाते–उठाते याञा के हाथ रूक गए। आयो (सास) को देखा। आयो ने नज़रे अपने पति की ओर घूमा दी। तभी बगल वाले कमरे से कार्गअ चिल्लाया- "नाई चाइए।"

याञा सोच में पड़ गई। कार्ली याञा से उम्र में आठ साल बड़ा है, अब कार्गअ से याञा स्वयं दस साल बड़ी है। कार्गअ मुश्किल से ग्यारह साल का होगा। आदिवासी लड़कियां उम्र से पहले घर के काम-काज में निपुण हो जाती हैं, वे उम्र से पहले परिपक्व हो जाती है तो लड़कों में वह परिपक्वता कुछ देर से आती है। इस ओर किसी ने नहीं सोचा।

याञा की आँखों के आगे अंधकार छा गया। अब करे तो क्या करे? इस बालक का इंतज़ार करे? ये जो अभी से इनकार कर रहा है, क्या वह बड़ा होने पर मुझे स्वीकार करेगा? फिर उसे याद आया कि मैं तो ताश के पत्ते माफ़िक हूँ, जो जिस ओर चाहा फेंक सकता है। जब पिता ने ही दुबारा नहीं सोचा तो ये तो गैर है।

दूसरी रोज़ उसे पता चला कि आतो ने कार्ली को इस बंधन से आज़ाद क्यूँ किया। उस रोज़ एक क्लर्क की सरकारी नौकरी करने वाली खूबसूरत लड़की कार्ली को घर ले आया। कार्ली नाम से ही उसका पति था, ये जानते हुए भी याञा उस लड़की से जलने लगी। अब घर के कामों में उसका मन नहीं लगता। जितनी वह उन दोनों से बचने का प्रयास करती, उतनी वह लड़की उसके आस-पास मंडराती रहती। जाने क्या था उसकी आँखों में? प्रेम, दया या व्यंग्य? याञा समझ नहीं पाई। बस भागती रही।

एक बार वह उस घर से ही भाग आई। भाग आई उस घर में जहां से उसे बेचा गया। वह आ गई अपने भाई की चार बच्चों का आया बनकर। कुछ दिन बाद ससुराल वालों से बुलावा आया, वह नहीं गई। फिर एक दिन गाँव में 'कबा' (पंचायत) बुलाया गया, तय था ससुराल वालों की जीत। रात के ग्यारह बजे जब गाँव

वाले सो गए, उस नीरवता को भंग करती हुई उसकी सिसकियाँ मेरे घर के बाहर सुनाई दी। माँ ने टॉर्च पकड़ा और पाया कि याज्ञा सीढ़ी के पास बैठी रो रही है। माँ ने उसे अंदर बुलाया–"कुछ खा लो और सो जाओ।"

वह कुछ नहीं बोली और चुपचाप आज्ञा का पालन किया। सुबह-सवेरे माँ ने कहा –

"याज्ञा चली गई है , बेचारी।" पर याज्ञा अपने घर नहीं गई। वह गाँव से भाग गई। किसी को कुछ पता नहीं कि वो कहाँ गई है।

यहाँ उसके भाईयों ने पिता द्वारा लिए गए पैसों को सूद समेत लौटा दिए। अब याज्ञा आज़ाद है पर कहाँ? किसी ने खोजने का प्रयास ही नहीं किया।

तीन साल बाद एक बार एक गाँव वाले को असम में याज्ञा दिख गई। वह बाज़ार में सब्जी बेच रही थी। अपने परिचित को देखकर वह और उसका पति जबरन घर ले आए, चाय-नाश्ता कराया। दो कमरे का छोटा-सा घर। अपने ससुराल से किसी को पहली बार मिलकर याज्ञा का पति बहुत खुश हुआ। अपनी खुशी ज़ाहिर करते हुए कहा–"हम दोनों बहुत मेहनत करते हैं। छोटा-सा है, पर घर अपना है। आपकी बेटी ने बहुत दु:ख सहा है, अब इसे खुशी देना मेरी ज़िम्मेदारी है। आप लोग निश्चिंत रहिए।"

दोनों ने असमीया गमछा पहनाया, चाय, चीनी, बिस्कुट आदि कई चीजें दो-दो हिस्से में करके दिया ताकि एक खुद रख ले और दूसरा हिस्सा याज्ञा के घर वालों को दे दे। याज्ञा ने पति को देखा। उसका पति मुस्कुराया। याज्ञा ने विदाई के समय आलमारी खोलकर दस हजार रुपए निकालकर देते हुए कहा–"चाचा जी, पाँच आपके लिए, पाँच पिताजी के लिए।"

ये नोट ताश के पत्ते नहीं थे। यह किसी तरह की भरपाई भी नहीं थी। यह एक बेटी का अपने गाँव-समाज से प्रेम और बिछुड़न का उदाहरण था। यह याज्ञा का सही और सुरक्षित जगह होने का एक संदेशा भी था, जहाँ वह स्वतंत्र और आत्मीय जीवन जीने की कोशिश में जुटी हुई थी।

*(**लेखकीय परिचय:** मोर्जुम लोयी चर्चित कथाकार हैं। वर्तमान में बीनी याडा शासकीय महिला महाविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश में सहायक प्रोफेसर पद पर कार्यरत हैं।)*